तरुण तेजपाल मामला और मिस कविता कृष्णन – Secretary of the All India Progressive Women's Association (AIPWA):

पिछले साल निर्भया का मामला जब आया तो उस अपराध को ले के आपके तीखे सुरों से बहुत प्रभावित हुआ था लेकिन उतनी ही निराशा हुई कल जब एन. डी. टी. वी. के प्राइम-टाइम डिबेट में आपको गिड़गिड़ाते हुए देखा| निर्भया वाले और तहलका की पत्रकार वाले मामले में इतना ही तो फर्क है ना कि:

1. निर्भया को बस में लूटा गया और इस पत्रकार को मीडिया हाउस की चारदीवारी में?
2. निर्भया को लूटने वालों में कोई नाबालिग था तो कोई अल्पमति वाला और इस पत्रकार के मामले में जो है वो पढ़ा-लिखा शातिर दिमाग मीडिया हाउस का मालिक?
3. निर्भया के मामले में आपने पूरे समाज और अपराधियों के खिलाफ विरोध के झंडे उठाये और इस पत्रकार के मामले में वकालत करती नजर आई कि legal cell पहले बनाओ ताकि ऐसे सारे मामलों को सामने लाया जाए?
4. निर्भया तो पुलिस शिकायत करने की स्थिति में भी नहीं थी तो भी आपने झंडे उठाये और इस मामले में कह रही हो कि पहले पीड़ित पत्रकार को शिकायत तो दर्ज कराने दो?
5. निर्भया के मामले में तो आपने कोई अभियोजन प्रक्रिया (prosecution process) बनने का इंतज़ार नहीं किया और इस पत्रकार के मामले में पहले प्रक्रिया बनवाने का इंतज़ार करवाने की वकालत करवा रही हो?

क्यों मैडम, तहलका आपके लेख छापता है इसलिए या तरुण तेजपाल आपका पारिवारिक सदस्य है इसलिए? क्या आखिर क्यों इतना दबे हुए लहजे में बात कर रही थी आप कि निर्भया वाले केस में जहां आपकी आवाज से प्रभावित हुआ वहीँ इस तेजपाल वाले केस में आपपे थू-थू करने का मन कर रहा है|

ऐसे ही निर्भयता और निष्पक्षता है आपकी कि एक ही हांडी में दो पेट करती हो? मुझे नहीं लगता कि किसी भी नारी अधिकारों से संबंधित संस्था की सेक्रेटरी तो क्या उसकी सदस्या भी बनने के लायक हो| आप जैसों की ही अगर दोगली मानसिकता है तो फिर तो हो लिया भारत से नारी पे अत्याचार ख़त्म|

आज एक बात तो देख ली कि आप उस सोच कि व्यक्ति हो जिसको भगत सिंह तो चाहिए लेकिन अपने आसपास नहीं, क्योंकि सावन के अंधे की तरह आपको अपने आसपास तो सब कुछ हरा-ही-हरा नजर आता है|

आपके नाम की सारी बुराई, औरतों पे अत्याचार तो बस भारत के ग्रामीण इलाकों में होता है और आपकी नजर से तो सिर्फ हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ही ग्रामीण इलाकों में होता है| तभी तो मुज़फ्फरनगर में जो हुआ उसमें भी आपको औरत की सुरक्षा की जगह उसको दबाने की बू आती है|

खैर वो वाकया फिर कभी फिलहाल तो रहम कीजिये उस पीड़िता पत्रकार की हालत पर और कानूनी और पुलिसिया मशीनरी को वक्त पर अपनी कार्यवाही करने दीजिये| जो कि अब तो खैर शुरू भी हो गई है, वर्ना आपने तो पूरे इंतज़ाम कर दिए थे अपनी दलीलों से मामले को लम्बा खींचने या आया-गया हुआ बनाने को|

भगवान से प्रार्थना करूँगा कि आपको निष्पक्ष और निडर बोलने और खड़ा होने का साहस दे और भारतीय ग्रामीण आँचल को आपकी दोगली मंशाओं से बचाये| आमीन!

Source: http://khabar.ndtv.com/video/show/prime-time/298772

Phool Kumar Malik